मगही भासा के जनम आउ विकास

मगही सबद के जनम 'मागधी' से होल हे। एकर विकास हम नीचे लिखल रूप में देखऽ ही—

मागधी > मागही > मगही

एकरा देखला पर स्पस्ट होवऽ हे कि मगही पुरनकी मागधी के नयका रूप हे। मागधी अपभ्रंस साखा के अन्तरगत मगही, मैथिली, भोजपुरी, उड़िया, असमी, बंगला आदि सब्भे भासा आवऽ हे बाकि मगही भासा ही मागधी के अधिक निकट हे। महापंडित राहुल सांकृत्यायन 'पुरातत्व निबंधावली' पुस्तक में संकलित 'मगही का विकास' निबंध में एकर समर्थन कैलन हे। भासा–रूपान्तर कैला पर मगही में मागधी के रूप झलकऽ हे।

प्राचीन भारत के सोलह जनपद में मगध के महत्वपूर्ण स्थान हे। हिंआ के निवासी मागध कहला हलन आउ हिंआ के भासा मागधी। नदी के परवाह नियन भासा के परवाह भी गतिसील हे। मागधी भी समय आउ बदलाव के संजुक्त परवाह में परवाहित होत गेल। आज ई मगही के अइसन रूप में मौजूद हे। हो सकऽ हे, काल के बदलाव के चलते आगे एकर रूप बदल जाय।''

प्राचीन भारतीय आर्यभासा के आरंभिक काल में भासा के दू रूप हल–वैदिक भासा आउ लौकिक भासा। 'वेद' सबद से 'वैदिक' बनल आउ 'लोक' सबद से 'लौकिक'। वैदिक सबद के अरथ हे–वेद के भासा यानि जेकरा में वेद रचल गेल। लौकिक भासा के अरथ हे–जनसाधारन के लोक–व्योहार के भासा। विकास के आधार पर वैदिक संस्कृत के भी तीन भाग में बाँट सकऽ ही–(1) प्राचीन संहिता काल (2) अर्वाचीन संहिता काल और (3) वैदिक गद्य काल। इहे तरह हम लौकिक संस्कृत के भी तीन भाग में बाँट सकऽ ही—पूर्व पाणिनि काल (2) पाणिनि काल आउ (3) पाणिनि के बाद वाला काल।

बाद में इहे लौकिक संस्कृत के नाम 'प्राकृत' पड़ल। विभासा इया बोली के रूप में एकर पहिला परयोग मगध साम्राज्य में ही होल हे। ई से एकरा 'मागधी प्राकृत' कहल गेल हे।

मागधी प्राकृत के काल करीब डेढ़ हजार बरिस (500 ई० पू० से 1000 ई०) तक हे एकरा पाँच–पाँच सौ ई० कै काल खंड में तीन भाग में बाँटल जा सकऽ हे। एकरा पहिला मागधी प्राकृत, दुसरा मागधी प्राकृत आउ तीसरा मागधी प्राकृत के नाम से जानल जा हे। एकरे पालि, प्राकृत आउ अपभ्रंस के नाम से पुकारल गेल हे।

पहिला मागधी प्राकृत—ई प्राकृत के काल 500 ई० पू० से ई० सन् के सुरू तक मानल जा हे। ई काल में भासा के विकास के अध्ययन के सामग्री पालि साहित्य आउ अशोक के अभिलेख में प्राप्त होवऽ हे। ई साहित्य में बौद्ध वचन आउ उपदेस के संकलन हे। भगवान बुद्ध इहे भासा में उपदेस देलन हे जेकरा संकलित करके इनकर चेला लोग साहित्य के रूप देलन है। अशोक के अभिलेख खरोस्टी लिपि में हे। इनकर चार गो अभिलेख ब्राह्मी लिपि में भी हे।

पालि कहियो साहित्यिक भासा न हल। सिंहल के भिक्खु पालि के ही मागधी भासा मानऽ हलन। एकर एकमात्र कारन ई हे कि अशोक महान के पुत्र महेन्द्र आउ पुत्री संघमित्रा इहे भासा में धरम–परचार श्री लंका जाके कैलन हल। बोली साहित्यिक गरिमा पाके भासा बन जा हे। पालि के साथ भी इहे होल हे।

दुसरा मागधी प्राकृत—दुसरा मागधी प्राकृत के काल ई० सन् के आरंभ से 500 ई० तक मानल जा हे। इहे भासा के बांद में 'प्राकृत' नाम पड़ल हे। प्राकृत के पुरनका रूप हमरा अश्वघोष के नाटक में मिलऽ हे। अश्वघोष के नाटक हालाँकि संस्कृत भासा में हे तइयो एकरा में प्राकृत भासा के परयोग होल हे। ई प्राकृत तीन रूप में मिलऽ हे—(1) दुस्टन के भासा (2) गनिका तथा विदूसक के भासा आउ (3) गोभम के भासा।

एकरा बाद जे प्राचीन प्राकृत रूप मिलऽ हे ओकरा निय प्राकृत कहल जा हे। एकर रूप पत्र के माध्यम से सर आरेलस्टोन के खोज से परकास में आयल हे। मध्य एशिया के पुरान शान-शान राज्य में खरोस्टी लिपि में भासा मूलत: भारत के लिखल पत्र के खोज आरेलस्टोन महोदय कैलन हल। एकर भासा मूलत: भारत के उत्तर–पच्छिम अंचल के भासा हे।

पुरनका वैयाकरन प्राकृत भासा के पाँच भेद कयलन हे—(1) शौरसेनी (2) पैशाची (3) महाराष्ट्री (4) अर्द्ध मागधी आउ (5) मागधी।

तीसर मागधी प्राकृत—तीसर मागधी प्राकृत के काल 500 ई० से 1000 ई० तक मानल जा हे। ई मध्य भारतीय आर्य भासा के विकास के अंतिम काल हे। एकरा ''अपभ्रंस'' कहल जा हे। ई काल मध्य भारतीय आर्य भासा आउ आधुनिक

भारतीय आर्य भासा के बीच के कड़ी के काल हे। एकरे पार कर के मगही आधुनिक रूप पयलक हे। ई से एकर महत्त्व आउ बढ़ जा हे।

अपभ्रंस के प्रारंभ काल आउ अवसान काल के संबंध में विद्वानन में मतैक्य न हे। एक वर्ग एकर सुरुआत 5 वीं सताब्दी से मानऽ हे तऽ दोसर वर्ग 6 वीं सताब्दी से। अपभ्रंस में जे साहित्य मिलऽ हे ओकरा में भासागत भेद कम हे। ई सउँसे साहित्य एक्के परिनिस्ठित भासा के हे।

अपभ्रंस के भेद के बारे में भी विद्वानन में मतैक्य न हे। अपभ्रंस के वर्गीकरन में 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' के उक्ति चरितार्थ होवऽ हे। आधुनिक विचारक लोग प्रत्येक प्राकृत से एक-एक अपभ्रंस के जनम स्वीकारलन हे। डॉ० नामवर सिंह अपभ्रंस के दू भेद गिनयलन हे, पच्छिमी आउ पूर्वी-पच्छिमी आउ पूर्वी। डॉ० याकोबी सब्भे प्राकृत से एक-एक गो अपभ्रंस के जनम मानलन हे। अइसे अपभ्रंस के सात भेद हे (1) शौरसेनी अपभ्रंश (2) मागधी अपभ्रंश (3) पैशाची अपभ्रंश (4) ब्राचड़ अपभ्रंस (5) खस अपभ्रंस (6) महाराष्ट्री अपभ्रंस आउ (7) अर्द्ध मागधी अपभ्रंस।

इहे मागधी अपभ्रंस से 'बिहारी हिन्दी' के अंतर्गत मगही के जनम होल हे। बिहारी हिन्दी में बिहार के तीन भासा-मगही, मैथिली आउ भोजपुरी आवऽ हे। बिहारी हिन्दी नामकरन डॉ० ग्रियर्सन कैलन हे।

अभ्यास के सवाल :

1. मगही भासा के जनम आउ विकास पर एगो निबंध लिखऽ।

●●●

मगही भासा के रूप

मगही भासा के कथा पर रोसनी डालइत एकरा तीन भाग में हिगरावित ही।

(क) मगही भासा के पुरनका सरूप

मगही भासा के पुरनका सरूप पर डॉ० रामनरेश मिश्र 'हंस' रोसनी डालइत कहऽ हथ—मगध के भासा मागधी के विकसित रूप ई मगही हे। मगध से मग्गह बनल ओइसहीं भासा परवाह में मागधी से मगही विकसित भेल। प्राकृत पहिले कि संस्कृत ई तथ्य आजतलक विवाद में हे। कुछ लोग कहऽ हथ कि प्राकृते के संस्कार करके ओकरा संस्कृत कर देल गेल—प्रकृत्या भव प्राकृतं, तत्संकृतरूपं संस्कृतम्'। फिनो दोसर पच्छ के लोग के मत हे कि प्रकृति संस्कृते हे, एकरे से प्राकृत के उदभव आउ विकास भेल-प्रकृतिः संस्कृत, तत्र भवः प्राकृतम्'। जउन बात सच होवे बाकि एतना तऽ दू टूक सच हे कि वेद के पहिला सूक्त अग्नि सूक्त हे मधुच्छंदा। मधुच्छंदा के जनम भूमि हे गया जिला के एगो गाँव 'मधसरमा'। जेकर देखताहर 'मधुच्छन्दे मधुविद्या के खोज कैलथिन आउ विद्या के बहुत जादे परसार कैलथिन–'मधुश्रव'। ग्यानामृत रूप मधु के पहिला सोता बिहार के ई मगहे बहउलक। ढेरो वैदिक सबद परचलन से बाहर भे गेल। लौकिक संस्कृतो उनका न टो सकल, प्राकृतो में उनकर कहँय टोह न मिले चाहे कोई केतनो टोइआवे। बाकि मगही उनका आजो टोवइत हे। मगही के वैदिक भासा के प्रति आसक्तियो कुछ कहइत हे जरूर।

प्राकृत के ढेरो रूप विकसित भेल बाकि पहिला प्राकृत होवे के ओजह से मागधिए के पहिलौंठ इया मूलभासा के प्रतिस्ठा देल गेल। भासा परिगनन परम्परा में सगरो मगही के बखान भेल। आचार्य भरत अप्पन 'नाट्यशास्त्र' में सात भासा में पहिले सुमिरन मागधीए के कैलन ''भागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्धमागधी। बाह्लीका दाक्षिणत्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिताः ।।''

इहे मागधी जब रास्ट्रभासा के रूप में फइल गेल तऽ ऊ अउर–अउर ठाँउ से भाव–सम्पदा के साथे ध्वनि संपदो अपना लेलक। इहे से सुरू के विद्वान भरमा गेलन कि मगही आउ मागधी में सम्बन्ध तऽ हे पर तनिका दूर के सम्बन्ध बुझा हे। आचार्य किशोरी दास वाजपेयी ई लोगन के जबाब देलन्न—''मगही बोली के

बनावटी के कहत? ई तऽ जनता के परवाह में हे। एकरा में मागधी प्राकृत के तत्व मिले के चाही-यानि संज्ञा आउ क्रिया के प्रत्यय विभक्ति आदि रूप में मगही आउ मागधी प्राकृत में कोई एकसूत्रता चाही। 'जो' 'सो' के जगह 'जे' 'से' रूप जरूर मागधी–मगही में एक सूत्र हे।

मूल भासा के रूप में मागधी के स्थापना ढेरो ठाम भेल। कच्चान मागधी के लौकिक बैखरी अभिव्यक्ति के पहिला अवतार आउ आत्मामृत के पहिला अधार कहलन, तऽ महावंसी एकरा सब्भे लोकभासा के मूल घोसित करइत नैरुक्तिक परिसीलन के आदेस दे हथ। 'विनयपिटक' आदि में तऽ भासिक निरुक्ति लेल संस्कृतो से बलगर मागधी कहल गेल हे। भगवान बुद्धो मागधी निरुक्ति पद कोविद के महापुरुस कहलकथिन हे। मोग्गलान के नजर में ई बुद्धदेव के मातृभासा आउ कच्चान के नजर में महासंबोधि के एकमात्र ढोवे-फइलावेओली बोली हे। एहिजे एगो भरम आउ दूर होवऽ हे। संपर्क भासा इया परचार भासा से विकसित होके रास्ट्रभासा बन गेला पर एकरा में सउँसे देस के संपर्क आ गेल।

भासा के दूगो रूप प्रचलन में हरसट्ठे रहल हे––परिस्कृत रूप आउ लोक परचलित अपभ्रस्ट रूप। ई से अपभ्रंस के भी एतने महातम देल गेल हे। पाणिनी वैदिक भासा लेल 'छन्दस', लोकपरचलित संस्कृत लेल 'भासा' आउ भासा के गँवारू रूप लेल 'विभासा' के परयोग कयलथिन हे। पतंजलि के एक सबद के केतना–केतना अपभ्रंस हे। ई कहऽ हथ तऽ आभीरादिगिरः आदि के जरिए अपभ्रंस के परिचय में एतने तथ्य हे कि अतिसाधारन जनता के अभिव्यक्ति लोकवानी इया लोक–संस्कृति के अभिव्यक्ति माध्यम में अपभ्रंस हे। ई नया परयोग इया लोकपरयोग खाली अनजाने इया वेवकूफिये से न होवऽ हे बलुक एकरा पीछे खास अर्थ विनियोजित रहऽ हे। ई सब परयोग भासिक अर्थ–विस्तार के भी सूचना दे हे। 'धेनुः' आउ 'वाष्केनीः' के अर्थ–भेद आज के मगही के धेन आउ बकेन से तऽ बूझल जा सकऽ हे बाकि संस्कृत के 'धेनुः' दूधारता के संकेत न करे ठीके हे। तमपभ्रंस–मिच्छन्ति विशिष्टार्थं निवेसिनम्' कह के भर्त्तहरि जी ई बात के पुरजोर समरथन करऽ हथ। नामि साधु पूर्वाचार्यन के निर्दिस्ट तीन भेद उपनागरा, आभीरी आउ ग्रल्या से भी जादे अपभ्रंस के मानऽ हथ आउ ऊ अपभ्रंस के बहुसः परयोग मगध में होइत हे, ऊ अपभ्रंस एगो दोसर लोकभासा के रूप ले रहल हे, ई घोसना करऽ हथ। वाणभट्ट, विद्यापति आउ विष्णु धर्मोत्तर पुराण के रचवैया अपभ्रंस के देसी भासा कहऽ हथ। आचार्य मम्मट, हेमचंद्र, रामचन्द्र-गुणचन्द्र (नाट्यदर्पण), अमरचन्द (काव्यलतापरिमल) अपभ्रंस के साहित्यिक भासा मानऽ हलन। अइसे तऽ

आधुनिक भासासास्तरी अपभ्रंस के साहित्यिक रूप के सुरुआत पाँचवी सदी से सकारऽ हथ, बाकि वैयाकरन से निर्दिस्ट रूप अशोक के ढेरो सिलालेख में मिलऽ हे—जइसे संयुक्त 'र' आउ उकारन्त पद के परयोग। धम्मपद, ललित विस्तार आउ महायान संप्रदाय के दोसर बौद्ध ग्रंथन के गाथा संस्कृतों में अपभ्रंस रूप के परयोग मिलऽ हे। सम्मितीय समुदाय के त्रिपिटक संस्करन अपभ्रंसो में हल, ई तारानाथ घोसित कैलन हे।

मगही के पुरान सरूप के भी दू गो मंजिल हे–मागधी अपभ्रंस आउ सिद्ध साहित्य में परयुक्त रूप। संस्कृत के समानान्तर डेग बढ़ावे के क्रम में एकरा में संस्कृत के सबदरूप, क्रियारूप, प्रत्यय औगैरह के अनुकरन दिखाई पड़ऽ हे तऽ अप्पन मउज–मस्ती आउ लोकसुलभ सुगमता भी। जइसे अदमी पंचकोसात्मक हे आउ ओकर ऊर्ध्वजतरा सप्तचक्रात्मक; ओइसही ओकर संस्कृतियो आउ ओकर ढोवेओली भासो। मुक्ति संत–महात्मा के भासा में आनन्दमयी संस्कृति, दारसनिक के भासा में विग्यानमयी संस्कृति, भक्त आउ कवि के भासा में मनोरमयी संस्कृति, रसिक के भासा में प्रानमयी संस्कृति, लोक जीवन आउ लोककवि के भासा में आनन्दमयी संस्कृति होवऽ हे। उद्भव जुग के राजस्थानी में आनन्दमयी आउ प्रानमयी संस्कृति, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका, अवधी, व्रजी में आनन्दमयी संस्कृति से विग्यानमयी संस्कृति के दरसन होत। मुदा अचरज के बात हे कि उद्भवजुगीन मगही के साहित्यिक मंच पर आगमन होवऽ हे— जहँ मन पवन न संचरइ रवि ससि नाही पवेस' के उद्घोसना के संग आनन्दमयी संस्कृति के साथ। वैदिक रूढ़ि के विकृति मिटावे के बेजोड़ भूमिका मागधी के हे, ओइसने क्रातिकारी भूमिका लोकान्दोलन इया भक्ति आन्दोलन में ई मगही के भी हे। सरहपा के वैचारिक धरती पर ही नाथ साहित्य, संत साहित्य के सुन्दर भवन खड़ा हे।

भासा के पहचान खाली सबद रूप आउ क्रिया रूप से न होवऽ हे। मुहावरा बोली–ठिठोली, गारी- गलउज, इलाकाई परिभासिक सबद, अभिधान कोस ओगैरह भी भासा के पहचान करावऽ हे। वेद मंत्र से सिद्धजुग तलक संस्कृत, प्राकृत आउ अपभ्रंस के झार-पछोर कैल जाय। भगिनी भासा के ड्योढ़ी भी झाँक लेल जाय तब असली पहचान हो सकऽ हे।

ऊपर में हम पुरान मगही भासा के प्रवृत्तिगत रूप के साथ विकासात्मक राह दन्ने इसारा कयली हे। एकर संरचनात्मक रूप इया परकीरती पर एगो नजर डालल जाय। संरचनात्मक दृस्टि से पुरान मगही आउ कहीं अझका मगही में भी नीचे लिखल नमूना पावल जा हे।

अथर्ववेद	मगही	अथर्ववेद	मगही
गोजित (७/५०/८)	गोजी	उत्तानशीवरी (३/२२/१०)	उत्ताने-सूतली
उ (१/११/१)	ऊ, आउ	गुल्गुलु (२/३६/९)	गुल्गुल
उत (१/११/२)	ओत	सासहिम (३/२१/३)	ससहि
सरूप (१/२५/४)	सरूप	मुष्कावई: (३/९/२)	मुसुकबरही
उत्सरू (३/१७/३)	सउसर	सीर (३/१७/२)	सीरा
उलुलि (३/१९/६)	उलुल्लइ	पवीर (३/१७/३)	पँवीर
गोसनि (३/२०/१०)	गोंसनि	सुशीम (३/१७/३)	सुसमि
जोहवीमि (३/२१/३)	जोहना		

एही तरह से रिगवेदोक्त अपभ्रंसगंधी वैदिक सबदन के भी पड़ताल कैल जा सकऽ हे—

गूहमा (१०/७२/६) गूढम लेल

शिशूला (१०/७९/६) शिशु:

रिरिह्वन्सं (१०/७९/३) प्ररधं (१०/८०/१) जइसन ढेरो वैदिक पद में उ, र, आउ 'ल' के अभेद मिलत। मागधी मगही में 'र', लेल 'ल', 'ड़' 'ल' लेल 'र', 'ड़' के परयोग बहुते मिले हे। मगही के सबदन पर वैदिक परभाव हे। 'विस्वन्' 'च्यवन' जइसन सबदन के प्रथमा आउ संबोधन के बहुवचन में 'विस्वा' 'च्यवना' रूप हो हे। मागधी में 'चिन्ता', 'रूपा' आदि के परयोग में इहे वृत्ति हे। इहे वृत्ति हे मगही के भत्ता, भात, दल्ला, दाल, भल्ला, भाला में, वैदिक आकारान्त पुल्लिंग सबद के प्रथमा बहुवचन में 'असुक्' प्रत्यय लगा के 'देवास':, 'जनास:' आदि रूप बनल हल जे पालि में देवासे' 'धम्मासे', 'बुद्धासे' रूप में चलल आउ मगही में 'देवास', 'जनास', 'धरमास', 'बुद्धास' बुद्धास रूप लेलक। वैदिक भासा के नियात 'वि', 'त', 'ह', 'नु' 'न' आदि के परयोग मागधी से मगही तक देखल जा सकऽ हे। संस्कृत में 'ष्ठ' से 'ठ्ठ' इया ट्ठ के वृत्ति मगही में मिलऽ हे। फिनो एकर 'ठ' के रूप में विकासो 'इष्ट' लेल 'इठ' आउ ओकरा में 'अ' जोड़के नकारार्थक 'अइठ', फिनो ओकरो में नकारार्थक 'निर' जोड़ के 'निरइठ'। ई सब्हे तऽ पुरनकी मगही के सामान्य विसेसता भेल।

(ख) मगही के मध्यकालीन सरूप

मगही के मध्यकालीन सरूप पर डॉ० तारकेश्वर सिंह कहलन हे—भासा विग्यान में मगही के 'बिहारी' बोली के अन्तर्गत गिनल गेल हे। आउर एकर संबंध पच्छिमी मागधी अपभ्रंस से बतावल जा हे। एक तरह से ई अब विवाद न रह गेल हे। एगो विसेस अभिप्राय से हम कहल चाहब कि 'बिहारी' बोली के अन्तर्गत मगही, भोजपुरी आउ मैथिली के गिनती होवऽ हे। मुदा बिहार के भौगोलिक स्थिति कुछ अइसन हे कि ई तीनों भासा के अलावे भी इहाँ भासा बोलल जा हे। ऊ सब्भे भासा के अप्पन भासागत आउ साहित्यिक अस्तित्व हे। ई तथ्य से इनकार न कैल जा सकऽ हे। अइसन स्थिति में 'बिहारी' नाम बहुत दूर तक एगो असंगति के गिरफ्त में हो जा हे, भासा विज्ञान ई सवाल के कोई सर्वमान्य हल निकाल सकऽ हे। मध्यकालीन सरूप में भी स्थिति स्पस्ट होवत। मध्यकाल में संत मत के कल्पक कबीर आउ ओही परम्परा के दोसर संत भी संस्कृत के कूप जल कह के जनवानी के स्वीकार कैलन। कबीर के ई कथन में बड़ा बल हे। जनमानस के परभावित आउ अनुसासित करे के मकसद से जन बोली के अनिवार्यता पर सवालिया निसान न लगावल जा सकऽ हे। सब्भे जानइत हे कि न केवल मध्यदेस के संत लोग बलुक हिन्दीत्तर प्रदेस के संतकवियन के वानी में भी जनवानी के रूप देखल जा सकऽ हे। कभी-कभी संतन के वानी हमनी के उटपटांग लगत तऽ एतना तऽ माने पड़ऽ हे कि ओहनी के भाव आउ विचार के सौस्ठव से जनबोली सँवर गेल। जन बोली के ई परिस्कार विरल रहल। ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, पंजावी, मैथिली, मगही, भोजपुरी ओगैरह से सनायल लपटायल भासा के सधुक्कड़ी तऽ कह देवल गेल मुदा सचमुच भासा के ई अभिधान भी ऐतिहासिक भर रह गेल। हिन्दी प्रदेस के संतन के बात तऽ अभी तनी देर ला छोड़ भी देल जा सकल हे, इहाँ तक कि गुजरात के संत कवि भी हिन्दीकरन के व्याज से मगही के पर्याप्त स्थान देलन। एकाध बानगी देखल जाय—'**अरवा ज्युँ खाँड़ा हेमका रंणमा**' ना आवे काम हमनी के इलाका में परयुक्त होवेओला मगही में अभी भी 'आवे' आवत आदि क्रिया रूप मिलऽ हे। गुजराती संतन मे नरसिह मेहता के बड़ा महातम हे। इनकर एगो पद हे—

कहाँ लगाई एती देर, अरे-अरे साँवरे ।
हैं गुजराती शिव को उपासी पूजौं साँझ-सबेर ।
भक्ति मर्म को सार न जानौं हाँसी कराई मेरी ढेर ।।

'कहाँ लगाई एती देर' में बड़ सुंदर व्यंजना हे। 'एती' आउ 'एतना' रूप मगही के देन हे। भक्तन के विरलता जइसन स्वीकारन 'एती' से व्यंजित हो रहल हे, ऊ अद्‌भुत हे। ओही तरह से 'साँझ' आउ 'सबेरे' भी मगही में चलऽ हे। 'साँझ-सबेर' के स्थानापन्न सुबह-साम कोई गीत पर न हो सकऽ हे।

प्रेम भाव के अइसन व्यंजना 'समर्थदास' के वानी में 'लगाव' क्रिया के जरिए भेल हे—**'अलख से प्रीत लगाव पियारे, तोह एहाँ से एक दिन जावना है'। 'यही पुर पद्धत लगे रंग लाल, यहाँ बेरही बेर नहीं आवना हे'** 'बेर–बेर' एगो सुन्नर मुहावरा हे। संसार के निस्सारता आउ 'बार–बार' न आवे के विवसता के समर्थ अभिव्यक्ति एकरा से दोसर का हो सकऽ हे। कहे के मतलब इहे कि 'बेर–बेर' में विलच्छन झनझनाहट हे। राजस्थान के मंदाकिनी 'मीरा' कहइत हथ—**'ऊँची अटरिया लाल किवड़िया, निरगुन सेज बिछी'**। अपने सब 'अटरिया' आउ 'किवड़िया' संज्ञा पद पर विचार करूँ। कहे के मतलव ई हे कि संत कवियन के संप्रेसन के माध्यम ओही भासा रहल हे जे वस्तुत: जनवानी के प्राकृत रूप हल। एक ठमा 'दादू' कहलन हे—**'बाबा भर दे भरदां गोई, एक दिन पाक करद दोइ।'** 'बाबा भरदे भरदा' आउ 'गोई' ओगैरह सबद मगही के अप्पन संपत्ति हे।

मन के चंचलता पर संत लोग खूब लिखलन हे। भक्ति के बाधक तत्व में मन के चंचलता विचारनीय हे। मन के मारल न जा सकऽहे। ओकर चंचलता पर काबू पावल जा सकऽ हे। बहिमुखी परवाह के अन्तर्मुखी बनावल जा सकऽ हे। ई लेल संत कहइत हथ—**'ये मन का कैसा इतवारा रे।'** 'इतवारा' मगही में विस्वास अर्थ बोध करावेला परयुक्त होवऽ हे।

नाम के महातम जत्ते कबीर आउ तुलसी बखानलन हे ओत्ते दोसर कवि नय। कबीर कहऽ हथ—**'मेरी बोली पूरबी, ताइ न चीन्हे कोई।** 'पूरबी' सबद के ढेरो व्याख्या लोग करऽ हथ। इहाँ पूरवी से मतलब जउन इलाका में कबीर के जीवन के अधिकांस वसंत बितल ओही इलाका के भासा हे। कबीर अनुभव सिद्ध पुरुस हलन। **'के तोर पुरुष के करि तुम नारी'** इस पद में कबीर मगही सबद के ही अपनावऽ हथ। कबीर भासा के चुनाव में जादे सतर्क न हलन। उनकर भाव के पीछे-पीछे तऽ भासा जइसे धउगल चलऽहल। हम्मर कहे के मतलब ई हे कि, मध्यकालीन संतन आउ अन्य भक्त कवियन के काव्य में परयुक्त मगही सबदन से ई साफ जाहिर हो जा हे कि मगही भासा केतना दूर तक फइलल हल आउ ससक्त हल।

(ग) मगही भासा के नयका सरूप

हिन्दी साहित्य में अमीर खुसरो के पदार्पन एगो नया युग के सुरुआत मानल जा हे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ई 1283 ई० के लगभग रचना आरंभ कयलन हल। कहल जा हे कि ई बहुत विनोदी आउ सहृदय सोभाव के हलन। जन जीवन के साथ घुल-मिल के काव्य रचना करे वालन कवियन में अमीर खुसरो के नाम पहिला हे। इनकर रचना में परमुख हे–खालिक बारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, गीत, दी सखुने, गजल आदि। मगही भासा के नयका सरूप इनके में मिलऽ हे। इनकर रचना में हिन्दी के साथ अरबी–फारसी के परयोग तो होवे कयल हे, नयकी मगही भी ससरीर हिंआ उपस्थित हे। ''इनकर सब रचना में हम मगही के नयका रूप के दर्सन करऽ ही। मगही के नयका रूप उपलब्ध होलो पर हम इनका मगही कवि कहे के जुर्रत न कर सकऽ ही। बाकि नयकी मगही के रूप के उपलब्धता देख के हम इनका नयकी मगही के अधिस्ठाता कवि न कहम, इहे अनुचित हे।''

(क) गीत में

अमीर खुसरो के केतना गीत में अरबी–फारसी मिलल मगही देखते बनऽ हे। लगऽ हे मगही के साथ अरबी-फारसी लटपटायल चल रहल हे। इनकर एगो प्रसिद्ध गीत के देखल जा सकऽ हे—

''जे हाल मिसकीं मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाय बतियाँ
किताबे हिज्र न दारम, ऐं जा न लेहु काहे लगाय छतियाँ

× × ×

सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अंधेरी रतिया ।।''

हिंआ पर बतिया, छतिया, रतिया के जे अंत्यानुप्रास आयल हे, ऊ विसुद्ध मगही के सबद हे। मगही के नयका सरूप ई तीनों सबद में देखल जा सकऽ हे। एकरा अलावे बनाय, लगाय, काहे, लेहु, काटूँ, जे आदि मगही सबदन में भी कोई आपत्ति न हो सकऽ हे।

(ख) मुकरियन में

अमीर खुसरो मुकरी भी खूब लिखलन हे। ई में परधानता तो हिन्दी के हे बाकि मगही भी अप्पन सोलहो सिंगार कइले हिंआ आयल हे। मगही के निछक्का सबदन के देख के मन लहलहा जा हे—

"जब मेरे मंदिर में आवे।
सोते मुझको आन जगावे।।
पढ़त-फिरत वह विरह के अच्छर।
हे सखी साजन? ना सखी मच्छर।।"

हिंआ आवे, जगावे, पढ़त-फिरत, अच्छर आदि मगही के निछक्का सबद हे। ई देख के हम कह सकऽ ही कि अमीर खुसरो में मगही भासा के नयका सरूप मिलऽ हे।

(ग) पहेलियन में

अमीर खुसरो के पहेलियन में भी मगही सबदन के परयोग होल हे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल आउ डॉ० नागेन्द्र दुन्नो मानऽ हथ कि अमीर खुसरो के पहेली साहित्य के नजर से भले ही कम महत्त्व के हे बाकि भाव आउ भासा के नजर से ई काफी महत्व के हे। इनकर एगो पहेली देखल जा सकऽ हे—

"तरुवर से इक तिरिया उतरी, उनने बहुत रिझाया।
बाप का उसने नाम जो पूछा, आधा नाम बताया।।
आधा नाम पिता पर प्यारा, बूझ पहेली गोरी।
अमीर खुसरो भी कहे, अपने नाम न बोली निगोरी।।"

हिंआ तिरिआ, इक सबद तो सुद्ध मगही के हे। तरुवर, रिझाया, उनने में भी मगही के झाँकी दिखाई दे रहल हे।

कबीर दास के 'बीजक' में

सिद्ध आउ नाथ जउन संत मत के नींव डाललन हल ओकरा पर 15वीं सदी के कबीरदास इमारत खड़ा कर देलन हल। सिद्ध आउ नाथ के जेतना परभाव कबीर पर पड़ल हे ओतना केकरो पर न पड़ल हे। सिद्ध आउ नाथ के भासा के भी कबीर पर निमन परभाव पड़ल हे। कबीरदास में मिलल मगही सबद के इहो एगो बड़हन कारन हे। "ई भासा के खिचड़ी आउ पंचमेल भासा भी कहल गेल। इहे खिचड़ी या पंचमेल भासा में एक जगह मगही के भी मिलल हे। कबीर दास के उक्ति 'बोली मेरी पूरबी' निस्चित रूप से मगही दन्ने संकेत करऽ हे। काहे कि पूरब के बोली के बोलियन में मगही ही सबसे समर्थ बोली हे।

कबीरदास लिखलन हे—**"बैस्नव की छपरी भली ना साकत को बड़ गाँउ।"**

हिंआ मगही के सबदन- वैस्नव, छपरी, साकत, गाँउ आदि के परयोग देखल जा सकऽ हे।

दोसर सत कवियन में

अकेले कबीर दास में ही न बलुक दोसर संत कवियन में भी मगही सबदन के परयोग मिलऽ हे। अइसन कवियन में रैदास, धरमदास, पीपा, दादू दयाल, मलूकदास, गुजरात के नरसी मेहता, मीराबाई, सहजोबाई आदि के नाम लेल जा सकऽ हे। रैदास में खड़ी बोली, अवधी, राजस्थानी के साथे मगही भी खूब मिलऽ हे। इनकर एगो पंक्ति देखल जा सकऽ हे—

"प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाको जोति बरै दिन राती ।

ई पंक्ति में बाती, जोति, बरै, सुद्ध मगही के सबद हे ।।"

कबीर दास के मरला पर उनकर चेला संत कवि धरमदास गद्दी पर बइठलन। मगही के कवि हलन उदाहरन देखल जा सकऽ—

"मितउ मड़ैया सूनी कर गैलो ।
अपना बलम परदेस निकरि गैलो, हमरा के किछुयौ न गुन दै गैलो ।।"

हिंआ मितउ, मड़ैया, बलम, परदेस, हमरा, गुन आदि मगही के अप्पन सबद हे।

इहे तरी मगही सबद मलूक दास में भी हेठुआ मनी मिलऽ हे। ई लिखलन हे—

"कहत मलूका निरगुन के गुन कोई बड़भागी गावै
का गिरही औ का बैरागी, जेहि हरि देय सो पावै ।।"

हिंआ 'निरगुन के गुन', बड़भागी, गिरही, जेहि आदि में मगही के सुद्ध सबद देखल जा सकऽ हे।

राजस्थानी भासा के अमर गयिका मीरा जब कूकऽ हथ तब मगही भासा दन्ने राजस्थानी भासा भी झुकऽ हे। मीराबाई लिखलन हे—

"ऊँची अँटरिया, लाल किवड़िया, निरगुन सेज बिछी ।"

तनी देखऽ तऽ 'अटरिया' आउ 'किवड़िया' तो विसुद्ध मगही संग्या पद हइये हे। मगही लोक गीत में धड़ल्ले से आज एकर परयोग हो रहल हे। एकरा अलावे हिन्दी कें निर्गुण' सबद 'निरगुन' हिआ आयल हे।

ई तरह हम देखऽ ही कि मगही के नयका सरूप मध्यकालीन भारत के कवियन से ही मिले लगऽ हे। "मगही सबद के अधार पर हम इनका सब के

मगही कवि न कह सकऽ ही। सच तो ई हे कि सब के सब संत कवि घुमक्कड़ हलन। देस भर में ई सब घूमऽ हलन। बातचीत आउ लोक व्यवहार के क्रम में जे सबद इनकर जुबान पर चढ़ जा हल ओकर परयोग ई लोग कर देवऽ हलन।''

अभ्यास के सवाल :

1. 'मगही भासा के पुरनका सरूप' के उद्देस्य के विवेचना करऽ।
2. पढ़ल पाठ के अधार पर मगही भासा के पुरानापन पर रोसनी डालऽ।
3. सिद्ध कैल जाय कि मगही पुराना भासा हे।
4. मगही के मध्यकालीन सरूप' के उद्देस्य पर रोसनी डालऽ।
5. 'मध्ययुगीन संतन के बानी में भाव के परधानता हे' कइसे?
6. ऐतिहासिक दृस्टि से मगही के मध्यकाल से का समझऽ हऽ?
7. अमीर खुसरो, कबीरदास आउ दूसर संत कवियन के रचना में मगही सबद के परयोग के उदाहरन देके समझावऽ।

●●●

मगही के लिपि

ई बात सच हे कि ध्वन्यात्मक भासा छँनभंगुर होवऽ हे। ओकरे स्थायित्व देवे खातिर लिपि विकसित भेल। लिपि भासा के देस आउ काल के बंधन से छुटकारा दिला देलक आउ भासा के चिरस्थायी बनौलक। लिपि विकास के तीन गो चरन हे—चित्रलिपि, भावलिपि आउ ध्वनिलिपि। चित्र लिपि में वस्तु के बखान होवऽ हल, ओकर फोटो बनावल जा हल। अदमी, मेहरारू, आँख ओगैरह ला ओकरे सन छोट चित्र बनावल जा हल। एकरा से जुटल अदमी भाव समझ जा हल। आज मगही भासा–भासी इलाका में पत्थर, हड्डी, हाँथी–दाँत, सींग, छाल, मट्टी के बरतन ओगैरह पर ई उकेरल मिलऽ हे। चित्र लिपि जादे कड़गर समझल जाय लगल तऽ भाव लिपि विकसित भेल। भाव लिपि में चित्र के सरल बनावल गेल। पुरनकी मगही आर्मेइक लिपि में लिखल गेल। 'तक्षशिला' में आर्मेइक लिपि के सिलालेख मिलल हे। ई भारतीय आउ खास तौर से मगहिया लिपि हे। आर्मेइक लिपि में लिखल पुरान बौद्ध आउ जैन साहित्य में मगही के सरूप मिलऽ हे। एकर बाद ब्राह्मी लिपि में भी मगही लिखल गेल। ई ब्राह्मी लिपि से मौजूदा भारत के सब्भे लिपि विकसित भेल। एतनै नय ब्राह्मी के उत्तरी आउ दखिनी दू गो रूप मिलऽ हे। उत्तरी से गुप्त लिपि आउ कुटिल लिपि निकसल। कुटिल लिपि ही पुरान नागरी के रूप विकसित भेल हे। कुटिल लिपि से 'कैथी' निकसल। एकरो तीन गो भेद मिलऽ हे--तिरहुतिया कैथी, भोजपुरिया कैथी आउ मगहिया कैथी। कैथी लिपि में आज लिखल न जा रहल हे। पहिले कोर्ट-कचहरी, चिट्ठी-पतरी, नेउता-पेहानी कैथी लिपि में लिखल जा हल। सर जार्ज ग्रियर्सन के परयास से 19वीं सदी के अंत में पाठ्यपुस्तक आउ सरकारी कामकाज में कैथी लिपि आदर पैलक। सिद्ध साहित्य के लिपि कुटिल लिपि हे। इहे कुटिल लिपि से नागरी लिपि विकसित भेल हे। इहे नागरी लिपि में मौजूदा मगही लिखल जा रहल हे। एकर खासियत हे कि जे बोलल जाय ओही लिखल जाय। जे लिखल जाय ओही बोलल जाय। एहमें एक ध्वनि में एक्के चिन्हा हे। छपाई आउ टंकन के सुविधा भी ई लिपि में जादे सुलभ हे। मगही में उर्दू नियन क, ख़, ग, ज ओगैरह ध्वनि के अभाव हे। नागरी एगो सुपठ्य लिपि हे।

'मगही' सिरिफ देवनागरी लिपि में नञ् कैथी में भी लिखल जा हल पहिले। कैथी कायथ शब्द से विकसित होल है। पहिले हर-हिंसाव आउ खाता-खतियान के जिम्मा कायथे लोग सम्हारऽ हलन। बुद्धि आउ ग्यान से भरल अनेक लोग कैथी जानऽ हलन।

ल	ला	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	आ	ई	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
फ	ध	ग	घ	न	य	छ	ज	झ	ञ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	न	त	थ	द	ध	न
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	
					श	ष	स	ह	
					श	ष	स	ह	
ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	

अभ्यास के सवाल

1. नगही कैथी लिपि के इतिहास लिखऽ।
2. लिपि विकास के कउन–कउन चरन हे।
3. नागरी लिपि के बिसेसता बतावऽ।

●●●

मगही भासा के सीमा विस्तार

मागधी इया मगही पर ग्रियर्सन के विचार
GRIERSON ON MAGAHI OR MAGADHI

Name of Dialect

Magahi or Magadhi is properly speaking the language of the country of Magadh. The Sanskrit name of the dialect is hence Magadhi , and this name is sometimes used by the educated : but the correct modern name is Magahi.

The ancient kingdom of Magadh

The ancient country of Magadh (now often called Magah) corresponded to what is at the present day, roughly speaking, the District of Patna , together with the northern half of the District of Gaya .It contained at three times three famous central cities . The oldest was Rajgriha , the modern village of Rajgir, situated in the heart of the low range of hills which at the present day separates the Districts of Patna from that of Gaya . The history of Rajgriha is enveloped in the mists of legend. Suffice it to say that, according to tradition its most celebrated king was named Jarasandha, who was overlord of a great part of central Hindustan. In the middle of the sixth century B.C. , it was ruled by king Bimbisara, who is famous as the patron of the Buddha. Here that great reformer lived for many years and the ruined site of the city teems with reminiscences of him . Bimbisara's son and successor founded the city of Patna, which in after years became the capital of Magadha in supersession of Rajgriha. Here in the latter half of the third century B.C. were the headquarters of the great Asoka, under whom Buddhism was finally adopted as the state religion.

Area in which Magahi is spoken

Magahi is however not confined to the old country of

Magadh. It is also spoken all over the rest of Gaya and over the district of Hazaribagh; and on the west, in a portion of the district of Palamau, and on the east, in portions of the Districts of Monghyr and Bhagalpur. Over the whole of this area, it is practically one and the same dialect, with hardly any local variations.

Eastern Magahi

On its eastern border Magahi meets Bengali . The two languages donot combine, but the meeting ground is a bilingual one, where they live side by side, each spoken by its own nationality. Each is however, more or less affected by the other, and the Magahi so affected possesses distinct peculiarities entitling it to be classed apart as a sub - dialect, which I have named Eastern Magahi . We find this dialect in the South East Hazaribagh, in Manbhum, in the South East of the District of Ranchi , in the Native state of Kharsawan, and even so far south as the Native States of Mayurbhanja and Bamra which belong politically to Orissa and Chhattisgarh , respectively . It is also spoken as an isolated island of speech in the west of the District of Malda.

Pure Magahi has also found its way down south of the District of Ranchi , and appears in the North of the District of Singhbhum, and in the Native states of Saraikala and Kharsawan, where it is spoken side by side with Oriya. It will be noticed that both standard Magahi and Eastern Magahi are spoken in Kharsawan.

Linguistic Boundaries

Magahi is bounded on the North by the various forms of Maithili spoken in Tirhut across the Ganges. On the west it is bounded by the Bhojpuri spoken in Shahabad and Palamau. On the North-East it is bounded by the Chhika-Chhiki Maithili of Monghyr ,Bhagalpur and the Santhal Parganas and on the South-East by the Bengali of Manbhum and East Singhbhum.

Standard Magahi is bounded on the south by the Sadan form of Bhojpuri spoken in Ranchi. It then, in the form of Eastern Magahi, runs along the eastern base of the Ranchi plateau through the Bengali-speaking District of Manbhum, and finally curls round to the West, below the south face of the same plateau in the North of Oriya-speaking District of Singhbhum, reappearing here as standard Magahi. It will thus be seen that a belt of Magahi-speaking population bounds the Ranchi plateau on three sides, the North , the East and the South.

(Quoted from LINGUISTIC SURVEY OF INDIA by G.A. Grierson, Vol. V. part-ll.P-30-31, published by the Supdt. of Govt. Printing, India, Calcutta -1903).

ई सच हे कि मगही मागधी से निकसल हे। ध्वन्यात्मक बदलाव के ओजह से सब्भे पुरान भारतीय आर्यभासा के रूप बदल गेल। मागधी के नाम–रूप 'मगही' रूप में बदलल लउकऽ हे। मध्य भारतीय आर्यभासा काल नें महप्राणीकरन के कारन ध–ह में बदल गेल। 'म' ध्वनि पूरा सुरच्छित रहल। ह्रस्वीकरन के कारन 'मा' ध्वनि 'म' के रूप में परिनत हो गेल। ई ढंग से मागधी > मागही > मगही रूप बनल।

अभ्फका मगही मगध के पुरनका सीमा में आबद्ध नय हे। ई गया, पटना, हजारीबाग, नालन्दा, नवादा, शेखपुरा, लखीसराय, कोडरमा, चतरा, गढ़वा, पलामू जहानाबाद, औरंगाबाद, अरवल, जमुई, सिंहभूमि, सरायकेला ओगैरह इलाका में बोलल जा हे। डॉ० ग्रियर्सन मगही के दूगो रूप बतैलन हे—पूर्वी मगही के इलाका हजारीबाग के दखिनवारी पुरवारी भाग, मानभूम, राँची जिला के दखिनवारी–पुरवारी भाग खरसावाँ, दक्खिन में मयूरभंज, वामरा, मालदा, पुरुलिया जिला यशपुर बोकारो, गढ़वा, धनवाद में बोलल जा हे। सुद्ध मगही पटना, गया, नवादा, नालन्दा, हजारीबाग, जहानाबाद, कोडरमा, चतरा, शेखपुरा में बोलल जा हे। टलहर मगही बाढ़, मोकामा, सूर्यगढ़ा, बड़हिया, बरबिघा के उत्तरी भाग में बोलल जा हे। गिद्धौर, जमुई के इलाका में गिद्धौरिया-मगही बोलल जाहे।

अभ्यास के सवाल :

1. डॉ. ग्रियर्सन के अधारपर मगही के सीमा बतलावऽ।

●●●

मगही लोकगाथा

मगही लोक गाथा में परमुख हे —(1) आल्हा (2) सोरठी वृजाभार (3) लोरकाइन (4) रेसमा-चुहरमल (5) सारंगा-सदाबृज (6) छतरी-घुघुलिया (7) कुँवर विजयी (8) राजा भरथरी (9) गोपीचंद (10) सोभा नायक (11) सती बिहुला (12)नेटुआ दयाल सिंह (13) राजा ढोलन सिंह (14) मान गुजरिया (15) मामा -भगिना (16) विक्रम (17)कर्दब- लीला (18) बनजारा (19) हिरनी-बिरनी (20) सहलेस (21) नूनाचार (22) राजा हरिचन (23) बाबा चिंतामन (24) बकतौर (25) बिहुला-विसहरी आदि ।

1. लोरकाइन—लोरिक साहसी, पराक्रमी आउ वीर तो हइए हल स्त्री के आउ सतीत्व के रच्छक भी हल।

लोरकाइन के रचना 13-14 वीं सदी में होल होत। लोरिक के बियाह मंजरी से भेल हल बाकि ऊ बाद में राजकन्या चंदवा से परेम करे लगऽ हे। लोरिक पाली-पिपरी के कोल आउ मल्लाह से जुद्ध करके ओकरा हरावऽ हे आउ अप्पन लाख गाय के छुड़ा लेवे हे। चंदवा के लेके लोरिक हरदी बजार जा हे।

संभवत: गौरा प्रयाग-संगम से उत्तर-पूरब आउ सरयू नदी के कछार पर कहीं बसल होवे के चाही—**''पछिम ले देसवा हो बसेला ना अबरु पन रे जाय, वामे बहइ सरजू भी ना दहिनवा गंग रे धार, जेकरा ना बिचवा बसेना गउरवा फूल रे हार कोई कहइ गउरा ईस्वर कोई कहे गुजरे रात ।''**

ऊ काल में पराजित देस के हतोत्साहित लोक जीवन के एगो अइसन लोकनायक के जरुरत हल जे अप्पन वीरता से परेरना दे। लोग के लगल कि यवन के क्रूरता आउ दमन के विरोध में अवाज उठावेवाला , ओकर मुकाबला करेके सक्ति लोरकाइन के नायक लोरिक में है ।

2. **रेसमा -चुहरमल** : ई लोक गाथा दुसाध जाति के वीर नायक चुहरमल आउ रेसमा से सम्बन्ध रखऽ हे। एकर स्थान गंगा से दक्खिन मोकामा के टाल इलाका हे। संभवत: 18 वीं सदी के उतरार्द्ध में अजब सिंह मोकामा में रहऽ हलन जिनकर

अपूर्व सुंदरी बहन रेसमा हल। ऊ अप्पन भाई के गुरु भाई चुहरमल से परेम करऽ हल। ऊ सिंगार करके तुलसी राम इनारा पर पहुँचल जहाँ चुहरमल चाराडीह अखाड़ा' से लउटते पानी पियऽ हल जब रेसमा चुहरमल के सम्मुख परेम परस्ताव रखऽ हे तऽ ऊ बिगड़ जा हे आउ ओकरा गुरु भाई के बहिन होवे के चलते बहिन घोसित करऽ हे, ई पर रेसमा भी क्रोधित होके बदला लेवे के धमकी दे हे। रेसमा अप्पन भाई अजब सिंह के वीर चुहरमल के बाँध के ले आवे ला बिबस करऽ हे।

चुहरमल देवी भक्त हल आउ वीर हल। ऊ जुद्ध में अजब सिंह के सेना के पराजित करके उनकर कटल सिर के गंगा में परवाहित कर देलक।

''बाबा तोरा बरजउ गे रेसमा, भैया समुझावउ गे ना।
कि रेसमा नहियें जाई तुलसी राम इनरवा गे ना।''

'लोरकाइन' के रचनाकाल मगही साहित्य के मध्यकाल के पहिल आधा काल में अनुमानित करल गेल हे, हुएँ रेसमा-चुहरमल' के अनुमानित काल मध्यकाल के दूसर आधाकाल में भेल हे।

3. **गोपीचंद**–एकरा में राजा भरथरी आउ गोपीचंद के बैराग आउ उनकर माता-पिता के करुन विलाप देखे लायक हे—

गोपीचंद के माय मैनावती के करुण विलाप दृस्टव्य हे—

''नौवे महिना बेटा ओदर में रखले हली
रहे वेर बिपतिया काल हमरा वेर
सात सरोत के दुधवा पिआए ऊँ
ओकरे के दमवा मोहि दे के जाहूँ।''

4. **छतरी घुघुलिया** : ई मुस्लिम काल के लोकगाथा हे। एकर नायक 'छतरी घुघुलिया' दिल्ली के एगो राजा शिशुपाल के पुत्र हे। ई अप्पन पिता के हत्यारा मामा से बदला लेवऽ हे।

'कुल देवी वचन—वीर के जे तू जनमल होयबें
बेटा छतरी जात के।
बपवा के बदले बेटा हो, पुतवा तइयार भेल तूँ
बपवा के बैर लेहीं तू, लेइले-हीं बयरवा रे सधाय
तब तोर होतउ दुनियाँ में नाम।

5. **कुँअर विजयी** : ई पठान मुराद खाँ के काल के गाथा हे।

ई गाथा में कुँअर विजयी अप्पन पिता के सतरू, ससुर आउ साला से प्रतिसोध लेवऽ हे।

''रामा बाँधी लेलक ढाल तरुअरवा रे ना,
रामा बाँधी लेलक कुँवर कलंगिया रे ना,
रामा लेई लेलक तिरवा-धनुहिया रे ना,
रामा कूदि घोड़ा भेले असवरवा रे ना।''

6. **राजा ढोलन सिंह** : राजा ढोलन मालिन के प्रेम जाल में फँस गेलन जेकर चलते राजकुमारी मरुअनी के विरह व्यथा के बरनन हे।

7. **नेटुआ दयाल सिंह** : ई गाथा में प्रेम-तत्व के परधानता हे। ई में जादू के मूर्तिमान रूप से जुद्ध करके दयाल सिंह विजय पावऽ हे।

8. **नयका बनजारा** : ई परेम कथात्मक गाथा हे। कहूँ-कहूँ एकरा सोभा बनजारा भी कहल जा हे। एकरा में नायक वनिक पूत शोभा नायक के बियाह तिरहुत के लड़की बारी से भेल। ई में ऊ गौना कराके अप्पन घरनी के घर लयलक आउ तुरते बेओपर करेला मोरंग चल गेल।

ई बीच ओकर घरनी के विरह देखे लायक हे—

''रामा देखले जे रहती मोरंगवा हो ना,
राम चली जयती बलमा के पसवा हो ना।
रामा करीं अब कउन जतनवा हो ना,
रामा कहाँ जाऊँ रहूँ कउन ठइयाँ हो ना।।

9. **सारंगा-सदाबिरिज** : ई में भी परेम-तत्व के परधानता हे। एकरा में व्योपार के भी बरनन हे।

''चंदन बदन मृग लोचनी हो प्यारी,
कहाँ तोहरो घरवा दुआर जी
तोहरो सुरतिया देखी मनवा लोभायल हो प्यारी
थिर नाहीं मनवा हमार जी।।''

10. **लचिया रानी** : उधमपुर नगर के राजा नवरंग सिंह बड़ा मसहूर हलन। उनकर लड़का युवराज प्रीतम सिंह के रानी लचिया अपूर्व सुंदरी हल। अधमपुर के

राजा के निगाह रानी लचिया पर पड़ जा हे। ऊ लचिया के रूप पर मोहित होके ओकरा पावे के परयास करऽ हे।

रामा लचिया अइली पोखरा के घटिया रे ना।
रामा करे लगली लचिया नहनवाँ रे ना।।
रामा बुढ़िया देली राजा के इसरवा रे ना।
रामा घेरि लेले आई के पोखरवा रे ना।

फिन दुन्नो राजा में लचिया लागी जुद्ध होवे लगल।

'रामा सथवा में चले प्रीतम सिंहवा रे ना।
रामा चढ़िवेऊ स्यामकरन घोड़वा रे ना।।
रामा दुन्नो दल भइले मुठभेड़िया रे ना।
रामा चले लगल तीर-तलवरिया रे ना।।

11. **राजा भरथरी** : ई में मुख्य रूप से राजा भरथरी के राज-पाट तेयाग आउ वैराग्य के बरनन हे। साथ–साथ आल्हा-उदल के भी एकरा में कथा हे।

''तब तो बोले राजा भरथरी, सुन मन्त्री मेरी बात
बावनो सूबा आ पहुँचल, फौज होवे न तइयार
जल्दी से दिल्ली चलना हे,
बावनो सूबा भी पहुँचल , फौज न होवत तइयार
एक न आयल आल्हा-उदल, नेवता उनका पठाओ आज''

12. **बाला लखंदर उर्फबिहुला-विषधर** : विषधर सब साँप के गुरु हल आउ बिहुला उज्जैनपुर के साहूकार बेचू साह के बेटी हल। सुमिरन के पद देखे लायक हे—

''ए राम छोटी-मोटी गछिया पसरवा तो
फल-फूल भेली कचनरवा ए राम।
ए राम जिनका पर चढ़े दुधवा के धरवा हो
जिनकर नइयाँ जगवा जपे ए राम''

13. **आल्हा–उदल** : एकरा में आल्हा आउ उदल नाम के दू भाई के बीरता के कथा हे। एकर रचना जनकवि जगनिक सन 1280 में कैलन। ई लोकगाथा में पृथ्वीराज चौहान, जयचंद, परमाल, महोबा मुख रूप से चर्चित हथ। ई वीरगाथा के

गायक लोग ढोलक बजा–बजा के गावऽ हथ। एकर सबद आउ सैली मुर्दा में भी जान फूँक दे हे:—

''बारह बरिस ले कुकुर जीए अउ तेरह ले जीए सियार ।
बरिस अठारह छतरी जीए जादे जीयल के धिक्कार।।''

ई सब गाथा के अलावे सहलेस, सोरठी बिरजाभार आदि गाथा भी मगध में गावल–सुनल जा हे।

अभ्यास के सवाल :

1. मगही के एगो लोकगाथा के बरनन करऽ।
2. लोरकाइन के का महत्व हे?
3. रेसमा चुहरमल के कथा संच्छेप में लिखऽ।
4. गोपीचन्द में बरनन भेल विरह के बरनन करऽ।
5. आल्हा-उदल के कहानी संच्छेप में बतावऽ।

●●●

मगही लोक नाट्य, नाट्य गीत आउ लोक नृत्य

मध्यकालीन मगही लोक नाट्य आउ नाट्य गीत के नीचे लिखल सरेनी में बाँटल जा सकऽ हे।

(1) धार्मिक अनुस्ठान से संबंधित नाट्यगीत, जइसे-कीर्त्तन, जातरा, जीतिया, करमा, भैया दूज आदि।

(2) मौसम पर अधारित नाट्य गीत—फागू, चैता, सावनी, बारहमासा, रोपनी आदि।

(3) भिन्न-भिन्न जाति से सम्बन्धित नाट्य गीत—दुसाध के नाट्य गीत, धोबी के नाट्य गीत, कहार के नाट्य गीत, कोइरी के नाट्य गीत आदि।

(4) केवल अउरत में परचलित लोक नाट्यगीत—डोमकच, बीछामार, चुलहारिन, सीता-मीता, गेदुरी आदि।

(5) **विविध** : (क) ओझा-डायन से संबंधित (ख) समाजिक-परिवारिक संबंध पर अधारित : सामा-चकेवा, बगुला-बगुली, जाट-जाटिन, सास-पुतोह, डोमकच आदि (ग) खेती बेओपार से संबंधित, सगबेचनी, मछली बेचनी, जीराबुन, दही बेचनी (घ) व्यावसायिक नाट्य—नाच, नेटुआ-कसबिन, कठपुतली आदि।

(1) बगुला-बगुली :

एगो औरत : कहवाँ से रूसल कहवाँ जा हऽ हे बगुली।

बगुली : ससुरा से रूसल नहिरा जा ही हे दीदिया।

दूसर औरत : कवने करनवाँ नहिरा जा हऽ हे बगुली।

बगुली : चउरा छटइते खुदिया खैलियो हे दीदिया।

एगो दूसर गीत हे—

बगुली : भइया मलहवा हो, नइया ले चल नदिया के पार।
हम तोरा देबो अन्नी-दुअन्नी, देबो, ढेबुआ चार, भइया मलहवा हो।।

मलहवा : न हम लेबइ अन्नी-दुअन्नी न लेम ढेबुआ चार।
हमरा देवऽ बाला जोबनमा करबइ नदिया के पार, बगुली बटोहिया गे।

(2) जाट-जाटिन

जाटिन : "टिकवा जब-जब मँगयली रे जटवा, टिकवा काहे न लयले रे।
साऽरी कमइया रे जटवा, कहमा तुहूँ गमयले रे।"

जाट : "टिकवा जब-जब लयली जटिनियाँ, टिकवा काहे न पेन्हले गे,
साऽरी उमरिया जटिनियाँ, नइहरा काहे गमयले गे।"

(3) डोमकच :

परसउतिन महिला के अभिनय—

"कमर से उठल दरदिया, दरद बढ़ि आयल हे।
दइया जल्दी से बइदा बोलावऽ कि जिया घबड़ायल हे।"

पति अर्थाभाव के चलते लचारी बतलावऽ हे तऽ ओकरा कहल जा हे—"अप्पन दुलरी बहिन के बेचके ले आवऽ सरजाम।
हम परसउती पीड़ा में ही खाके मिलत अराम।।"

जब घर-परिवार के सब सदस्य बरात चल जा हथ तऽ घर के सुरच्छा के दृस्टि से महिला सब रात भर जाग के डोमकच के अभिनय करऽ हथ। एकरा में पुरुष परवेस के मनाही हे।

(4) सीता-मीता

औरत समूह : "सीता-मीता गेलो हे तमोलिया घरे।"

भउजाई : "तमोलिया छौंरा पुता भौरौले होतइ नऽ,
अगे माई बिरवा खिलौले होतइ नऽ,
अगे माई कजरा कजरौटे होतइ नऽ,
अगे माई सेनुरा भुरकवले होतइ नऽ।

दूसर गीत हे : "चलनी भर सूता काटलऽ लाखो,
ढकनी भर माड़ पीलऽ लाखो,
तलवा न खुले तलइया गे माई,
कन्ने भुलैलन ननदिया गे माई।
देहरी बइठल ननदोसिया गे माई,
कउनी जबबिया लगैबइ गे माई ?"

ई में ननद के घर से बाहर गेला पर भउजाई चिन्तित होके खोजऽ हे।

(5) केवटी :

केवटी : 'मछरी लेबऽ हे गहँकी ?

गहँकी : कउन मछरिया गे केवटी ?

केवटी : पोठिया मछरिया हे गहँकी

गहँकी : कउची से बरोबर गे केवटी

केवटी : चाउर से बरोबर हे गहँकी

गहँकी : अँकटी से बरोबर गे केवटी

केवटी : "तोहर अँकटी में आढ़न-बाढ़न, चूल्हा के भनसार जाए।
ओते जायम,चाउर लेम, दाल लेम, भांत बनाम, मिल के खाम।
मोर गजाधर मारे मछरी।"

इहाँ केवटी आउ गँहकी के बीच संवाद हे।

(6) बिखभरी :

औरत : अँगूठा के बिख चढ़ गेलो दाई, चढ़ गेलो दाई
के मोर बिखिया उतारे दाई

औरत समूह : "चान तोर भइया, सूरज बहनोइया
ओहि तोर बिखिया उतारत दाई
गाँव के गोड़इतवा गाँव लेले जाई
सउँसे मननपुर बेधल जाई।।"

ई लोक नृत्य अकसर औरत समूह द्वारा भादो महिन्ना के इँजोरिया पच्छ में खेलल जाहे। ई खासतौर से करमा बरत के रात में खेलल जाहे । एकरा में पुरुस परबेस के मनाही हे।

(7) नट-नट्टिन :

''बाबू दरोगा जी, कउने कसुरवा बान्हलऽ पियवा मोर,
ना मोर पियवा लुच्चा-लफंगा ना मोर पियवा चोर,
ना मोर पियवा मधुआ से मातल, करे बीच सड़कवा अनोर,
बाबू दरोगा जी....

पहिले तो नट-नट्टिन आपस मे खूब झगड़ा करऽ हथ बाकि दरोगा के पकड़ला पर नट्टिन नट के छुड़ावेला आरजू-मिन्नत करऽ हे।

(8) कारो-घाटो : वीर जोद्धा कारो एगो अद्वितीय सुंदरी घाटो से परेम करऽ हे। घाटो के अपहरन करेवालन से ऊ डँट के लड़ऽ हे बाकि ई लड़ाई में ऊ मारल जा हे। ओकर प्रेमिका घाटो भी लड़ाई में मारल जा हे। पटवा जाति में आझो कारो-घाटो लोक नाट्य खेलल जा हे।

(9) हिरनी-बिरनी : हिरनी-बिरनी नामके दू गो बहिन हल। दुन्नो कसम खयलक कि जे खूँखार 'मोहन भैंसा के नाथ देवत ओकरे से बियाह करम। बावन

अखाड़ा के वीर के भैंसा पराजित कर दे हे। अंत में दिल्ली के वीर छतरी पासन सींग भैंसा के नाथ देलक आउ दुन्नो बहिन से बियाह कर लेलक। एकरा साथे दूगो मुरगा भी पात्र हे जेकर माँस खिलाके हिरनी-बिरनी पासन सींग के अप्पन जात में मिला ले हे।

गीत हे—

''सुनऽ सुनऽ हो बाबू भइया एक कस्ट हम देही, हम कहऽ मयगर भैंसा तूहूँ नाथ दऽ। बाहया बनके दुन्नो बहिनी तोर दुआरी गुजर करबै अनकर दुअरा गोबर काढ़इत सउँसे उमर गँवैवे करबै'।

(10) **भीम कुँवर** : ई लोक नाट्य में 'वेणुवन' एगो सुंदर वनस्थली हे जहाँ सिकार खेलेला रानी पद्मिनी सबके मना कर देलक हे। एक दिन रानी के पति राजा भीम कुँवर ऊ जंगल में चल गेलन आउ एगो कपटी साधु द्वारा मारल गेलन। राजा के चार रानी हल। सब रानी विलाप करित साधु के पास गेलन। बड़की रानी पद्मिनी सोना-चाँदी देके साधु से राजा के जिलावे ला कहलन बाकि साधु तइयार न होल। अंत में छोटकी रानी के देवे पर बात बनल आउ साधु राजा के जिला देलक।

(11) **सूखा आउ मान कुँअर** : ई लोक नाट्य में मान कुँअर के प्रतिव्रत धरम पालन के बड़ा दुखद चित्रन मिलऽ हे। बाल विवाहिता मान कुँअर के पति चेचक के परकोप से अंधा हो जा हे। ऊ दर-दर भटके लगल। इधर मान कुँअर अप्पन पति के खोज में घर से निकलल। अनेक बाधा के बाद ऊ एगो साधु से मिलऽ हे। ऊ साधु ओकर पति के आँख के जोत परदान कर देवऽ हे।

(12) **जितिया** : धनरोपनी के बाद किसान-मजदूर जितिया लोक नाट्य आउ नाच के आयोजन करऽ हथ, नायिका रुस के नइहर चल गेल हे—

''हर जोती अयली, कुदारी पारी अयली, हमरी तिरिअवा कहाँ गेल।
सबके तिरिअवा मइया घरे-घरे देखली, हमरी तिरिअवा कहाँ गेल।''

अभ्यास के सवाल :

1. गीत के पंक्ति के साथ कउनो दू गो नाट्य गीतके बरनन करऽ।
2. कउनो दूगो लोक नाट्य के वार्तालाप लिखऽ।

●●●

मगही के कुछ परसिद्ध लोकगीत

1. **देवर-भौजाई के प्रसंग** में ई झूमर हे—

''देवरा बनसी खेले जाई हे झर-झर नदिया ।
हमहूँ बनसी देबइ तोड़ हे झर-झर नदिया ।।'

2. **माली-मालिन संवाद** :—

''बीच रे बगइचवा राजा कुइयाँ खनउले सुनू मालिन हे।
चूँटी के धारी चलउले पनिहारिन सूनू मालिन हे।''

3. **धनरोपनी के गीत** : ''खेत में मरुआ रोपली, झर-झर लोर गिरे।
कउन उपयवा लगाऊँ हो बलमजी।
कादो के करइया के डेढ़ सेर मुजरिया,
से हँथवा में फोड़ा पड़ि जाय हो बलम जी।''

4. किसान–किसानिन संवाद:—

किसानिन : कुसुम रंग चुन्नरी रँगा दे पियवा हो, कुसुम रंग चुन्नरी।
चुन्नरी रँगा दे पिया, ओढ़नी रँगा दे।

किसान : चुन्नरी रँगइबो धानी, ओढ़नी मँगइबो,
अपने हाथ तोहरा सजइबो धनिया हे, कुसुम रंग चुन्नरी।

5. पति-गौरव गीत —

जलवा में चमकइ चेल्हवा मछरिया, रैनिया चमकइ तलवार।
सभवा में चमकइ सामी के पगड़िया, हुलसऽहइ जियरा हमार।

6. गौना के इंतजार में नायिका के रंग पियर हो गेल हे —

पिया -पिया रटि के पियर भेलइ देहिया, लोगवा कहे पांडुरोग ।
गउआँ के लोगवा मरमियो न जानइ, गवना न भेलइ मोर ।।''

7. धोबी-धोबिन गीत :—

धोबी : मोटे-मोटे लिटिया पकइहें गे धोबिनियाँ से बिहने जयबउ धोबीघाट।
ताड़ के खोचड़िया में टिकिया तमकुआ गे, से रखिहें साज के सम्हार ।
हथवा में लिहें धोबिन नरियर-नरबोचवा से मथवा पर लिहें धोबी मोट ।

धोबिन : धोबिया के छौड़ा रे, मुड़िया कटौना से चुल्हवा झोकौना,
से हाय धोबी बिहने जयबे धोबीघाट।

8. चैता :''रोज-रोज बोले कोइली भोर-भिनसरवा,
आज काहे बोले अधरतिया हो रामा, कोइली मीठी बोलिया।
होवे दे बिहान कोइली खोंतबा उजारबउ,
बगिया कटइबो धनी बगिया हो रामा, कोइली मीठी बोलिया।''

9. ननद–भाभी परिहास :

''कउन रंग डोलिया,कवन रंग ओहरवा, कवन रंग हो ननदो तोरा भइया ?
लाली रंग डोलिया, सबुज रंग ओहरवा,
सॉवर रंग हो ननदो तोरा भइया;
टूटी गेलइ मुंगवा बिखरी गेलइ मोतिया, रुसिये गेलन हो ननदो तोरा भइया,
चुनी लेबइ मुँगवा, बटोरी लेबइ मोतिया, मनाई लेबइ हो ननदो तोरा भइया ।।''

10. देवी गीत :''नीमिया के डॉढ़ मइया लगले हिंडोलवा कि झूली-झूली ना।
मइया गावेली गितिया से झूली-झूली ना।।
झुलित-झुलित मइया लगले पियसवा कि चली गेलन ना।
मलहोरिया अॅगनवा मइया चली गेलन ना ।।''

एगो दूसर गीत हे—''छोटी-मोटी नीमिया गछिया,भुइयॉ लोटे डाढ़ गे माई ।
ताही तर सीतल मइया खेले जुगवा सार गे माई ।
होवे दे बिहान नीमिया जड़ी से कटयबो गे माई ।
तोहरे डहुँगिया नीमिया घेरबो घेरान गे माई ।''

11. बारहमासा : "मास असाढ़ सखि कइसे बितायब बलमा गेलन परदेस हे, सावन अधिक सुहावन लागे, रिमझम बरसे मेह हे।
हम धानी भिंजली अपनी महलिया,बलमा भिंजले परदेस हे।''

12. छठ गीत : ''केलवा जे फरले घउद में ऊपर सुग्गा मँडराय,
मारबउ रे सुगवा धनुस से सुग्गा गिरे मुरुछाय।
सुगिवा जे रोवले वियोग में सुरुज होवऽ न सहाय।।''

13. विरह-गीत :

''गवना कराई पिया देहरी बइठवले हो अपने चलले परदेस रे।
अपने न आवे पिया चिठिया न भेजले, बीत गेले बारहो बरिस रे निरमोहिया।।''

अभ्यास के सवाल :

1. 'मगही के तीनगो चरचित गीत के व्याख्या करऽ।
2. किसान के जिनगी से संबंध रखेवाला दूगो गीत के बरनन करऽ।
3. मगही गीत में बरसा रीतू कउन रूप में आयल हे?
4. देवी गीत के महत्ता बतलावऽ।
5. मगही गीत में विरह बरनन कहाँ तक सार्थक भेल हे ?

●●●